डॉ॰ कुसुम अन्सल

जन्म - 1 अगस्त, 1940

अलीगढ

प्रा क्क थ न

हिन्दी की महिला उपन्यासकारों ने विषय वैविध्य से ओतप्रोत बहुतसी औपन्यासिक रचनाएँ लिखी हैं। उषादेवी मित्रा, कृष्णा सोबती, शिवानी, उषा प्रियम्वदा, शशिप्रभा शास्त्री, मेहरून्निसा परवेज, मन्नू भंडारी, निर्मला बाजपेयी, ममता कालिया, मालती परूलकर, कृष्णा अग्निहोत्री, क्रांति त्रिवेदी, कांता भारती, मंजुला भगत, निरूपमा सेवती, दीप्ति खंडेलवाल, सूर्यबाला, सुनिता जैन, मृदुला गर्ग, मालती जोशी, शुभा शर्मा, प्रतिमा सक्सेना, बिंदु सिन्हा, मृणाल पांडेय , प्रतिभा वर्मा, मणिका मोहिनी, उषा चौधरी, राजी सेठ, कुसुम अन्सल आदि अनेकानेक महिला उपन्यासकार आज अपने कथा साहित्य के माध्यम से नारी जीवन की कथा-व्यथा को पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रही हैं।

इन महिलाओं के उपन्यासों में नारियों के सामाजिक दायित्व का निर्वाह, नये सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, रूढ़ियों का बहिष्कार, जातीय भावनाओं के संदर्भ की चर्चा, विवाहविषयक बदलते दृष्टिकोण, प्रौढ, अविवाहित युवतियों की स्थिति, विवाहपूर्व स्थापित यौन-संबंधों से गर्भधारणा, दहेज के कारण नारी जीवन को अभिशप्तता, दहेज के कारण होने वाला विवाह का सौदा, वैवाहिक जीवन की असंतुष्टतता, विवाह प्रथा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, दाम्पत्य संबंधों में सडांधता, मर्जी के खिलाफ सम्पन्न वैवाहिक जीवन में उत्पन्न घुटनशीलता, शैक्षिक असमानता के कारण वैवाहिक जीवन में उत्पन्न बाधा, अंतर्जातीय विवाह के प्रति आकर्षण, बहुपत्नीत्व तथा अनमेल विवाह से प्रति उपेक्षित दृष्टिकोण, विधवा विवाह का समर्थन, संबंध विच्छेद से निर्मित अकेलेपन की पीड़ा, पुनर्विवाह का समर्थन, यौन-संबंधों के विविध तौरतरिकों की तलाश, प्रेमत्रिकोण का समर्थन, नारी देह विक्रम के खिलाफ हेय दृष्टि, संयुक्त परिवार की घुटनशीलता, नौकरीपेशा नारी का दफ्तरी माहौल में होनेवाला शोषण, नारी का दैहिक, आर्थिक तथा सामाजिक स्तर पर

होनेवाला शोषण, आर्थिक अभावग्रस्त नारी की महत्वाकांक्षा के परिणामस्वरूप उसका होने वाला शोषण, पुरूष की स्वार्थी प्रवृत्ति आदि अनेक नारी जीवन के तथ्य देखने को मिलते हैं जिन तथ्यों पर इन महिला उपन्यासकारों ने अनुभूति और संवेदनाओं के साथ चिन्तन किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का विषय है - "कुसुम अन्सल के हिन्दी उपन्यासों का अनुशीलन"। कुसुम अन्सल साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में एक महत्वपूर्ण हस्ती है। जिन्होंने "उदास आँखें" 1975, "नींव का पत्थर" 1976, "उसकी पंचवटी"1978, "उस तक" 1979, "अपनी-अपनी यात्रा" 1981, "एक और पंचवटी" 1985, "रेखाकृति" 1989 आदि हिन्दी के उपन्यास लिखें। उन्होंने "किस पछाता सच", "राहां की भाल", नामक पंजाबी तथा 'Sqng me No songs', 'Travelling with a Sunbeam' आदि अंग्रेजी उपन्यास भी लिखे। लेखिका कुसुम अन्सलजी ने "स्पीड ब्रेकर", "पते बदलते हैं", "इकत्तीस कहानियाँ" नामक हिन्दी कहानीसंग्रह और "हनेरे का कारण" नामक पंजाबी और 'Matchmaker and other stories' नामक कहानी संग्रह भी लिखे हैं। "मौन के दो पल", "धुएँ का सच", "विरूपीकरण" नामक उनके कवितासंग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। कुसुमजी बहुमुखी प्रतिभा की लेखिका हैं और उपन्यासकार के रूप में हिन्दी के लिए कुसुमजी का महत्वपूर्ण योगदान है। हमने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए उनकी "उस तक" 1979, "अपनी अपनी यात्रा" 1981, "एक और पंचवटी" 1985, आदि तीन महत्वपूर्ण औपन्यासिक रचनाओं को चुनकर इन तीन रचनाओं का अनुशीलन किया हैं।

कुसुम अन्सल ने "उस तक" उपन्यास द्वारा एक ऐसी युवती की कथा विशद की है जो निम्न-मध्य-वर्ग में पली है। तीसरी कन्या होने के नाते परिवार में बचपन से ही अपशकुनी मानकर उसकी उपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप मुक्ता शुरू से ही दीन और शांत स्वभाववाली बनकर वातावरण एवं परिस्थितियों से समझौता करके जीवन पथ पर अपनी महत्वाकांक्षा के बल पर अग्रसर होती है। प्रारंभ से ही वह महत्वाकांक्षिणी, पढ़ने में कुशाग्र होने के नाते बी·ए· की

उपाधि हासिल करने के उपरान्त स्वावलंबी बनकर आत्मनिर्भर होकर स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। यहाँ कुसुमजी ने समाज की विद्रुपताओं, भ्रष्टनीतियों, छल-छद्म की प्रवृत्तियों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते-करते मुक्ता को जिन्दगी के अनेक पड़ावों पर से गुजरने को बाध्य किया है।

कुसुम अन्सल के "अपनी अपनी यात्रा" 1981 की नायिका सुरेखा को केंद्र में रखकर उपन्यास की कथा को बुनाया गया है। सुरेखा की माँ का सुरेखा के पैदा होते ही गुजर जाना, सुरेखा का बचपन बुआ के परिवार के सदस्यों के बीच व्यतीत होना, माँ की मृत्यु पर भी सुरेखा का अपनी अंतर्रात्मा से माँ की स्मृति से जुडा रहना, माँ की मृत्यु के कटु सत्य ने उसके मन में कुंठा का निर्माण होना, माँ की कमी उसे सदैव महसूस होती रहना, बुआ और बाबूजी के घर में पूर्ण अपनाव की स्थिति के बावजूद भी उसे माँ के अभाव में अपने आप में एक रिक्तता का अनुभव होना, अकेलेपन की पीड़ा का उसे सदैव दबोचते रहना, सुरेखा का अपने पिताजी के घर कानपुर में जुडा रहने का प्रयत्न करने पर भी विमाता द्वारा उसे न अपनाना, सुरेखा को अपमानित तथा व्यंग्योक्तियों से प्रताड़ित किया जाना, सुरेखा के साँवले रंग के कारण उसका विवाह तय होने में बाधा आना, लॉ की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने पर भी जीवन के प्रति उसे आनन्द न लगना, साँवले रंग की नियति के कारण उसके जीवन के रूपरंग में बाधा डालना, मातृत्वविहीन होने के कारण उसके मन में कुंठा और अन्तर्द्वन्द्व का निर्माण होना, खुद के प्रति हीनत्व की भावना और अरूचि का निर्माण होना, इन सभी घटनाओं के साथ-साथ कुसुमजी ने सुरेखा की मानसिकता के विभिन्न पहलुओं पर मनोविज्ञान-वेत्ता की भाँति प्रकाश डालने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

इस पीड़ाजन्य स्थिति में सुरेखा की मुलाकात बहिर्मुखी और स्वच्छंदी मधुर से होना, सुरेखा की जीवन ग्रंथियों से अलग जीवन ग्रंथियाँ मधुर में दिखाई देना, मधुर का जीवन खुला, स्वच्छ दर्पण की भाँति होना, मधुर के कारण सुरेखा की मुलाकात प्रभावशाली, शांत, गंभीर प्रसिद्ध ॲडव्होकेट शिव से होना, शिव के सान्निध्य में सुरेखा को शिव के लिए ही अपने को बनाया है, ऐसा लगना, सुरेखा द्वारा शिव

को एक मार्गदर्शक, पथदर्शक, अभिभावक एवं प्रेमी के रूप में देखना आदि सभी तथ्यों के साथ साथ कुसुमजी ने सुरेखा के मन की जटिलताओं को बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में लेखिका अन्सलजी ने विभिन्न उल्लेखों, घटनाओं, सामाजिक विसंगतियों की ओर इशारा करके सामाजिक कुप्रवृत्तियों पर व्यंग्य किया है।

दहेज प्रथा की भयावहता को मिन्ना के माध्यम से प्रस्तुत करके अन्सलजी ने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा नवधनाढ्य परिवारों के दोहरे स्तरों पर जीवन जीनेवाले लोगों पर तीखा व्यंग्य किया है। इस दहेज प्रथा ने भी अपना परम्परागत रूप परिष्कृत एवं परिवर्तित कर दिया है। लेखिका यहाँ यह विशद करना चाहती है कि आज देश वैज्ञानिक तथा भौतिक प्रगति के शिखर पर पहुँचने की कोशिश कर रहा है, फिर भी देश के सामाजिक स्तरों में कोई प्रगति नहीं हो रही है। कुसुमजी ने भारतीय नारी में स्थित कर्तव्य परायणता तथा संस्कारशीलता मिन्ना और सुरेखा के माध्यम से हमें दर्शायी हैं। मधुर के माध्यम से एक स्वच्छंदी नारी का रूप चित्रित किया है, तो सुरेखा के माध्यम से मजबूर बनकर भारतीय नारी भारतीय संस्कृति की पवित्र सीमाओं के लांघने के लिए कैसे बाध्य होती हैं इस पर प्रभावी रूप में चिन्तन किया है। अवधेश के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी की यौन-उच्छृंखलता के दर्शन कराये हैं।

"एक और पंचवटी" में संयुक्त परिवार में दम घुटने वाली साधवी द्वारा अपनी विवशता पति के सामने प्रस्तुत करते हुए भी पति को समझ नहीं पाना, आगे चलकर साधवी द्वारा देवर के साथ अवैध-संबंध रखना, पति से अलग होना, आत्मनिर्भर बनना, विक्रम से उत्पन्न दो बच्चों को जन्म देना, अंत में पति के साथ समझौता करके ससुराल लौट आना आदि साधवी के जीवन के कई पड़ावों को यहाँ शब्दांकित किया है।

कुसुम अन्सल के ये तीन आलोच्य उपन्यास कोमलतम, भावानुभूति के आश्रय में पले हैं। उनमें फूहड़पन बीभत्सता के दर्शन नहीं होते हैं। भारतीय संस्कृति

के पवित्रम परदे को कहीं छेद न पडे इसकी सावधानी कुशलता के साथ कुसुमजी ने रखी है। ये उपन्यास हास्य से कोसों दूर, वीर रस से अछूते रहकर शृंगार, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, ममता, बंधुत्व के भावों के दर्शन हमें करा देते हैं।

कुसुमजी के आलोच्य उपन्यास केवल वर्णनमात्र नहीं करते या केवल घटनाओं का कोरा जाल बनाकर पाठकों को भावविभोर नहीं बनाते बल्कि कई विचारधाराओं को प्रवाहित करके पाठकों को विचार करने को भी बाध्य करते हैं। कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में मानवीय अन्तश्चेतना प्रवृत्ति का विचार प्रभावी ढंग से प्रवाहित हुआ है। कुसुमजी एक व्यक्तिवादी उपन्यास लेखिका होने के नाते प्रस्तुत विचार इन उपन्यासों में प्रभावी रूप में प्रवाहित हुआ है। व्यक्तिवादी उपन्यास व्यक्तिसापेक्ष होते हैं। उनकी कथाएँ व्यक्तिविशेष की जीवनानुभूतियों, कल्पनाओं आदि को बटोरती रहती है। एक मुख्य व्यक्ति पात्रों के चारों ओर घुमता है। एक व्यक्ति को या पात्र को केंद्र में रखकर कथावस्तु विकसित होती है। यह विकास हर व्यक्ति के निजी अस्तित्व को प्रमुखता देता है। इनमें व्यक्तिगत जीवन, व्यक्तिगत घटना, व्यक्तिगत चरित्र, व्यक्तिगत जीवनदर्शन, व्यक्तिगत जीवन समस्या का निरूपण प्रमुख रहता है। व्यक्तिवादी उपन्यासों में पात्रों की संख्या कम, व्यक्ति के अहं का निरूपण अधिक रहता है। व्यक्तिवादी उपन्यासों के ये सारे तथ्य कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में समकालित हुए है।

कुसुमजी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में व्यक्तिवादी लेखिका है, जिनकी दृष्टि अपने उपन्यासों में सदैव इधर-उधर झलककर मानवी सत्य-पक्ष की तलाश में लगी रहती है। कुसुमजी के इन व्यक्तिवादी विचारों में मानसिक ग्रंथियों और व्यक्ति की कुंठाओं के दर्शन होते हैं। इनके उपन्यासों में समाज की बाह्य तथा आंतरिक समस्याओं को गौण स्थान दिया है और विशेष व्यक्तियों तथा नारियों की समस्याओं का समाधान विशिष्ट सिद्धान्तों द्वारा ढूँढने का प्रयास किया है। कुसुमजी के उपन्यासों के कथानक पात्र विशेष से संबंधित हैं और घटनाक्रमों में अपनी इच्छाशक्ति के अनुसार घुमते रहते हैं। कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में पात्रों की संख्या कम है। इनके उपन्यास इने-गिने पुरुष एवं नारी पात्रों के माध्यम से पूर्ण सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

कुसुमजी ने अपने आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से नारी पात्रों की अंतर्वृत्ति, प्रेम, इर्ष्या, काम, इच्छा, घृणा आदि का संवेदनात्मक चित्रण करके "उस तक", "अपनी अपनी यात्रा", "एक और पंचवटी" आदि उपन्यासों को विशुद्ध व्यक्तिवादी उपन्यासों की कोटि में ढालने का प्रयत्न किया है। इन उपन्यासों में व्यक्ति के तथा नारियों के अन्तस्तल को अंकित किया गया है। कुसुम अन्सलजी व्यक्तिवादी लेखिका होने के नाते उन्होंने अपने उपन्यासों के सभी पात्रों में व्यक्ति के निजत्व को निखार देकर उनकी अंतर्मुखी प्रवृत्तियों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी मान्यताएँ तथा अपने विचार अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यंजित किये हैं। उन्होंने अपने पात्रों में स्थिति समस्त भाव, कुंठा, कसक, वेदना, टीस, पीड़ा, शून्यता, प्रेम, अन्तर्द्वन्द्व, संत्रास आदि को समर्थता के साथ चित्रित किया है।

कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में बौद्धिक दृष्टिकोण के भी दर्शन होते हैं। आज का युग बौद्धिक चेतना से सम्पन्न है। वैज्ञानिक प्रगति और भौतिकवाद के प्रसार के इस युग में आज का व्यक्ति हृदयगत तथ्यों को गौण और बुद्धिजन्य तर्क को अधिक महत्ता देकर जा रहा है। आज का मानाव भौतिक तत्वों के घेरे में अटक रहा है गतिशील बनता जिससे वह अपने मन और आत्मा को हेय दृष्टि से देखने लगा है। आज व्यक्ति-व्यक्ति से टूटने लगा है और आत्मकेंद्रित बनकर सत्ता को अपने हाथ में बटोरने की कोशिश कर रहा है। कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में इनमें से कई तथ्य देखने को मिलते है।

कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण भी देखने को मिलता है। कुसुमजी ने अपने उपन्यासों में चेतन और अवचेतन नारी मन के संघर्ष तथा इनकी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का दिग्दर्शन मुक्ता, सुरेखा, साधवी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। आधुनिक जीवन की जटिलता तथा मानव मन के विभिन्न स्तरों को यथार्थ रूप में चित्रित करने के लिए कुसुमजी ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया है। इनके उपन्यासों के वाक्यों के शब्दों में मनोवैज्ञानिक नये-नये सिद्धान्त और विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता लक्षित है। "उस तक" की मुक्ता और "अपनी अपनी यात्रा" की सुरेखा कुंठित, अंतर्मुखी, लापरवाही और

लघुत्व की ग्रंथि से पीड़ित है। "एक और पंचवटी" की साधवी भारतीय नारी परम्परा की लीक पर से हटी नारी है। स्पष्ट है कि कुसुमजी ने मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टिकोण के माध्यम से अपनी औपन्यासिक रचनाएँ लिखी। इन रचनाओं का आधार फ्रायडियन सिद्धान्त लगता है। इसी सिद्धान्त के अनुकरण पर इसके पात्र यथार्थ जगत पर विचरण करते हैं।

अन्सल के उपन्यासों में हमें सामाजिक विचारधारा के भी सशक्त दर्शन होते हैं। आज के समाज में समस्याओं का बाहुल्य है। आज की परिवर्तित सामाजिक स्थिति एवं गति के बीच आज का मानव आबद्ध है, जिससे वह बच नहीं सकता। आज के मानव को आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के संघर्षों से मुँह देना पडता है। कुसुमजी के उपन्यासों में व्यक्ति के संघर्ष का सुंदर चित्रण मिलता है। उन्होंने व्यक्तिवादी आंतरिक संघर्ष और समाजवादी वर्ग संघर्ष को अपनाकर समाज का प्रत्यक्ष चित्र उपस्थित करके व्यक्ति के माध्यम द्वारा समाज की समस्याओं को परखने का नया प्रयोग करके इन समस्याओं के सुधार के सुझाव भी तर्कपूर्ण रूप में प्रस्तुत किये हैं।

कुसुमजी एक व्यक्तिवादी उपन्यास लेखिका होते हुए भी सामाजिक तथ्यों से अलग नहीं रह सकी हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को हमने छह अध्यायों में विभाजित किया हैं

अध्याय : 1 आधुनिक नारी स्थिति एवं गति

इस अध्याय में हमने आज के समाज में नारी का स्थान, आज की आधुनिक नारी, नारी मुक्ति आंदोलन, साठोत्तरी हिन्दी की महिला उपन्यासकार: एक अवलोकन, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों के नारी पात्र आदि के माध्यम से आधुनिक नारी की स्थिति और गति पर प्रकाश डाला है और नारी शोषण से मुक्ति के विविध आयामों की चर्चा की हैं।

अध्याय : 2 कुसुम अन्सल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में कुसुमजी का बचपन, घरेलु वातावरण, शिक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, धार्मिक संस्कार, नाट्य अभिनय, साहित्य-सृजन, विदेशी यात्रा, कुसुमजी का व्यक्तित्व आदि के माध्यम से कुसुमजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रस्तुत करके उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर पड़े प्रभाव को तलाशने का प्रयत्न किया है।

अध्याय : 3 कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएँ

इस अध्याय में हमने अर्थाभाव की समस्या, आर्थिक स्वतंत्रता की समस्या, विवाह से उत्पन्न समस्याएँ, यौन-संबंधों से निर्मित समस्याएँ, नशापान की समस्या, अकेलेपन की समस्या, नारी शोषण की समस्या, संयुक्त परिवार की समस्या आदि नारी जीवन संबंधी समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत करके यह सिद्ध कर दिया है कि कुसुमजी ने नारी जीवन की समस्याओं के पीछे समाज व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया है। कुसुमजी ने नारी जीवन की समस्याओं के अतिरिक्त बढ़ती आबादी की समस्या और जातीय भेदाभेद की समस्या पर भी चिंतन किया है। जिन समस्याओं से कुसुमजी में स्थित सामाजिक विचारधारा के दर्शन होते हैं। कुसुमजी व्यक्तिवादी लेखिका होने के नाते उन्होंने अपने उपन्यासों में समस्याओं का हल ढूँढने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

अध्याय : 4 कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों का अनुशीलन

इस अध्याय में हमने कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारियों की घुटनशीलता, नारियों की स्वावलंबी बनने प्रवृत्ति, नारियों की महत्वाकांक्षा, नौकरी पेशा नारियों की बेइज्जती, नारियों की टूटनशीलता, नारियों की स्वच्छंदी बनने की प्रवृत्ति, नारियों द्वारा विवाह बंधन अस्वीकार करने की नीति, मानवीय संबंध, यौनसंबंध और मानवतावादी दृष्टिकोण आदि के माध्यम से कुसुमजी के उपन्यासों का अनुशीलन करके कुसुमजी का साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में महत्वपूर्ण स्थान निश्चित करने का प्रयत्न किया है।

अध्याय :. 5 **कुसुम अन्सल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में आशय**

इस अध्याय में कुसुम अन्सल के "उस तक" 1979, "अपनी अपनी यात्रा" 1981 और "एक और पंचवटी" 1985 आदि उपन्यासों के आशय को मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुए इन उपन्यासों में चित्रित नारी मनोविज्ञान के विविध पहलुओं को नजरांदाज किया है और शिल्प की दृष्टि से कुसुमजी के उपन्यासों की सफलता पर प्रकाश डाला है।

अध्याय : 6 "उपसंहार"

"उपसंहार" में हमने लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया है और कुसुम अन्सल के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन के विविध आयामों को नजरांदाज किया है। हमने यह भी दिखाने का प्रयत्न किया है कि कुसुमजी ने महानगरीय नारी का पक्षधर बनकर नारी जीवन की हिमायत की है। ये नारियाँ संघर्षरत रहकर अपना अस्तित्व तो जमाती हैं परंतु अंत में समाज व्यवस्था की बुराइयों के कारण टूटकर बिखर जाती हैं, इस पर भी यहाँ चिन्तन किया गया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे वेणुताई चव्हाण कॉलेज कराड के हिन्दी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष प्रा·डॉ·वाय्·बी·धुमालजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोध-कार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का ही यह शुभ परिणाम है कि एकनिष्ठ भाव से शोध-कार्य में संलग्न रहने की धैर्यशक्ति मैं पा सका और अंततः कार्य को सम्पन्न कर सका। श्रद्धेय गुरूवर डॉ·वाय्·बी·धुमालजी ने मुझे अपने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के सैद्धान्तिक पक्ष से अवगत कराकर कुसुम अन्सल के उपन्यासों के अनुशीलन में उत्साह एवं प्रेरणा दी। उनके शांत, गंभीर व्यक्तित्व तथा उदार भाव से युक्त ज्ञान के फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका है। उनके प्रति यह शाब्दिक आभार मेरे हृदय से स्थित कृतज्ञतापूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा के प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ तथा हिन्दी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ·गजानन सुर्वे, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·पी·एस्·पाटील तथा डॉ·अर्जुन चव्हाण का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर निर्देश देकर मेरे शोध-कार्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में मुझे सौ·नयना धुमालजी की भी विशेष सहायता मिली, जिन्होंने मुझे इस कार्य के हेतु बार-बार प्रोत्साहित किया।

इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में मुझे प्रा·श्री और सौ·आढाव, प्रा·डॉ·सौ·छायादेवी घोरपडे, प्रा·जयवंत जाधव, प्रा·सुनिल जाधव, प्रा·रघुनंदन सालुंखे, प्रा·एस्·पी·शिंदे, प्रा·मानेदेशमुख आर·एस·, प्रा·भस्मे, तुलशीदास घनवट, बागल, काटकर भाई, फौजी भाई शिवाजी, प्रवीण, बालू इंगले, फडतरे, कु·सविता, संगीता, विद्या पाटील, प्रा·जे·ए·पाटील, प्रा·काळमोर आदि मान्यवरों ने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देश देकर लाभान्वित किया। इसलिए मैं इन सभी समान्यवरों का आभारी हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध की परिपूर्ति के लिए मेरी माताजी श्रीमती पार्वतीबाई तथा मेरे भाई-भाभी, बहन आदि की विशेष प्रेरणा मिली। इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। मेरे कॉलेज के भूतपूर्व प्राचार्य अशोक महादारजी तथा प्राचार्य आर·पी· वलेकरजी और विद्यमान प्राचार्य मेस्त्रीजी की भी विशेष प्रेरणा और सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। इन सभी के प्रति मै हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य के लिए स्वयं उपन्यासकार डॉ·कुसुम अन्सलजी ने पुस्तकें जुटाने में अत्यंत तत्परता के साथ मेरी सहायता की और साथ-ही-साथ पत्रोत्तर के माध्यम से मेरी समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न किया इसलिए उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

वेणुताई चव्हाण कॉलेज, कराड के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, शिवाजी कॉलेज सातारा के

ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, बलवंत कॉलेज, विटा के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, पी·व्ही·पी·कॉलेज, कवठे महांकाळ के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी आदि का मैं विशेष ऋणी रहूँगा, जिन्होंने पुस्तके जुटाने में अत्यंत तत्परता के साथ मेरी सहायता की।

इस प्रबंध के टंकन का अत्यंत महत्वपूर्ण काम "रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग सातारा" के श्री·मुकुन्द ढवले तथा उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी इन्होंने किया। उनके सहयोग के लिए मैं हृदय से आभारी हूँ।

सावळज

दिनांक : 26·6·96

प्रा·राजेंद्र पिलोबा मोसले